माटीमिली

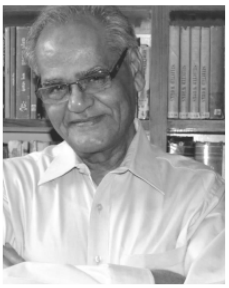

हिन्दी ADDA

रमेश उपाध्याय

माटीमिली

https://www.hindiadda.com/matimili/

"इस तरह मुँह काला कराएगी, रधिया, तो गाँव में तेरा टिकना मुश्किल हो जाएगा।"

जाड़े की आधी रात है। चाँदनी में कोहरा घुला हुआ है। खेतों से गाँव की ओर जाने वाला दगड़ा धुँधलाए उजास में सुनसान और डरावना लग रहा है। लेकिन यहाँ एक धर्मप्राण व्यक्ति एक गिरी हुई औरत को उपदेश दे रहा है। धर्मप्राण व्यक्ति हैं पंडित शिवदत्त और गिरी हुई औरत है रधिया कुम्हारिन।

"अगर भली औरत की तरह नहीं रह सकती, तो कहीं और जा मर।" पंडित शिवदत्त कह रहे हैं और रधिया सुन रही है।

जूते-मोजे और कोट-कंबल डाटे, सिर पर ऊनी टोपी और उसके ऊपर से कसकर मफलर बाँधे पंडित शिवदत्त रधिया पर गर्म हो रहे हैं और रधिया पैरों में सिर्फ दो रुपये वाली प्लास्टिक की चप्पलें पहने, धोती-कुर्ती पर बस एक सूती खेस लपेटे खड़ी काँप रही है।

खेत में सोबरन से मिलकर वह जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर लपकी जा रही थी कि पीपल के नीचे से आते पंडित शिवदत्त अचानक हाथ में लोटा लिए प्रकट हो गए। इतनी रात और इतनी ठंड में तो कुत्ते-सियार भी कहीं दुबके रहते हैं, लेकिन पंडित शिवदत्त आ रहे थे। पहचानकर बोले, "रधिया, तू? इतनी रात को कहाँ से आ रही है?" और सहमी हुई रधिया चुप खड़ी रह गई, तो सब कुछ जानते-बूझते भी कहने लगे, "तो सोबरन से तेरी यारी चल रही है, क्यों?" और फिर शायद भूल ही गए कि लोटा लेकर घर से किसलिए निकले हैं।

न ठंड की परवाह है, न रात के सन्नाटे की। रधिया के चारित्रिक पतन की समस्या उनके लिए सर्वप्रमुख हो उठी है और वे उसे उपदेश दिए जा रहे हैं। उनके विचार से रधिया अपने दुराचार से गाँव की नाक कटवा रही है, गाँव में घोर कलियुग ले आई है, बालकों को रात में अकेले छोड़कर यहाँ खेतों में रासलीला रचाने आती है, लोक-परलोक की कुछ भी चिंता नहीं...।

रधिया यह सब न समझती हो, सो बात नहीं; लेकिन रधिया के अपने तर्क हैं। उसके हिसाब से जवान औरत को मर्द चाहिए और बिन बाप के बालकों को बाप। उसका आदमी जिंदा होता, तो वह भी किसी सती-सावित्री से कम नहीं थी। हालाँकि वह

जानती है कि सोबरन वह मर्द-बाप नहीं है, लेकिन अकेली औरत को, जिसे सब चींथ खा जाना चाहते हों, सुरक्षा का कोई साधन तो चाहिए।

लेकिन गाँव रधिया के तर्क नहीं मानता। उसके लिए तो रधिया बस एक गिरी हुई औरत है। शुरू में जब रधिया अपनी बदनामी से डरती थी, कोई कुछ कहता तो सफाइयाँ देने लगती थी और झूठी कसमें खा जाती थी। फिर भी कहा-सुनी बंद न होती, तो लड़ने लगती। झूठी तोहमतें लगाकर सामने वाले की आबरू मिट्टी में मिला देती। कहती, "कौन दूध का धोया है, मैं भी तो जानूँ। मुझे तो सब समझाते हैं, कोई उन लोगों को क्यों नहीं समझाता, जो हमेशा मेरी मिट्टी खराब करने की ताक में रहते हैं?" रधिया की इतनी बात सच होती और इस सच के आधार पर वह किसी के भी बारे में बड़े से बड़ा झूठ बोल जाती। इसलिए लोग उससे डरने लगे थे। आज भी डरते हैं। मगर नफरत भी करते हैं, इसलिए चुप भी नहीं रह सकते।

रधिया ने जब देखा कि गाँव वालों के मुँह किसी तरह बंद नहीं किए जा सकते, तो अपना ही मुँह बंद कर लिया। अब कोई कुछ कहता है, तो कहता रहे। वह किसी को जवाब नहीं देती। सारे लांछन, सारे उपदेश चुपचाप सुन लेती है। इस समय भी सुन रही है। सुन रही है, वरना ठेंगा दिखाकर चली गई होती, तो पंडित शिवदत्त क्या कर लेते उसका?

पंडित शिवदत्त रधिया की चुप्पी से चिढ़ रहे हैं। कह रहे हैं, "कितनी ढीठ हो गई है तू! कोई कुछ भी कहता रहे, तुझे किसी की परवाह नहीं।" उनकी चिढ़ स्वाभाविक है। जवाब न मिले, तो लांछन धरने वाले का मजा नहीं आता। गुस्सा और चढ़ता है, "नहीं मानती तो जा, मर, हमें क्या है! जैसा करेगी वैसा भुगतेगी। देखती जा, तेरी देह में नरक फूटेगा। बुढ़ापे में भीख माँगती डोलेगी।" लेकिन जानते हैं कि उपेक्षा से भी तो काम नहीं चलेगा, इसलिए फिर कहते हैं, "तू चाहती है कि हम इस अनर्थ को चुपचाप देखते रहें? सो नहीं होगा। इसका मतलब तो यह है कि तू जो पाप करती है, गाँव की रजामंदी से करती है। पर गाँव यह सब बर्दाश्त नहीं करेगा। पंच-प्रधान लोग तेरा बहिष्कार करने की सोच रहे हैं। खैर चाहती है, तो अब भी सँभल जा।"

रधिया सुन रही है और चुप है। उसे गाँव से निकाल देने की कोशिश आज से नहीं, तभी से चल रही है, जब से वह विधवा हुई है।

सरूपा कुम्हार मरा था, तो लोगों ने अंदाजा लगाया था कि अकेली रधिया यहाँ नहीं रहेगी। गाँव में कोई दूसरा घर कुम्हारों का नहीं है। सरूपा भी सात-आठ साल पहले ही इस गाँव में आकर बसा था। पहले वह अपने गाँव से गधे पर बरतन लादकर यहाँ

बेचने आता था, लेकिन शादी के बाद ही भाइयों में बँटवारा हो गया, तो सरूपा यहाँ के मुखिया ठाकुर नूरसिंह के सामने आकर रोया था, "ताल के किनारे एक झुपड़िया डाल लेने दो मुखिया, जिंदगी-भर तुम्हारे बासन बनाऊँगा।" मुखिया ने इजाजत दे दी थी और सरूपा अपनी नई ब्याहुली रधिया के साथ गाँव में आ बसा था। कच्ची ईंटें पाथकर दोनें ने खुद ही ताल के किनारे अपना घर बना लिया था और गाँव ने उन्हें ऐसे अपना लिया था, जैसे वे सदा से यहीं रहते आए हों। लेकिन एक बेटी और एक बेटा पैदा करके सरूपा जब पिछले साल हैजे से मर गया, तो लोगों ने सोचा था, अकेली रधिया अब क्या रहेगी यहाँ? सरूपा के भाई उसे लेने आए थे। एक रँडुआ देवर तो रधिया से नाता करके यहीं रह जाने की बात भी करता था, लेकिन रधिया ने लड़कर सबको भगा दिया था। कहा था, "जब चार दिन की ब्याहुली को घर से निकाला था, तब कहाँ गई थी तुम्हारी दया-माया? चले जाओ, मैं अकेली ही अपनी जिंदगी काट लूँगी।"

कुम्हारों में सदा के लिए विधवा बनकर रहना जरूरी नहीं। रधिया चाहती, तो कहीं भी नाता कर लेती, लेकिन अपने हाथों बनाए घर और रोटी-कपड़ा दे सकने वाले जमे-जमाए चाक से उसे इतना मोह हो गया था कि न तो उसे छोड़कर कहीं जाना चाहती थी, न उसे यह पसंद था कि सरूपा का घर किसी और का घर कहलाए। डरती भी थी कि दूसरे आदमी ने अगर सौत लाकर छाती पर बिठा दी, तो वह अपने बालकों को लेकर कहाँ जाएगी?

गाँव वालों को रधिया का रह जाना अच्छा लगा था, लेकिन मुखिया को अखर गया था। रधिया के चले जाने की संभावना सामने आते ही उसके घर पर उनकी नजर गई थी। भले ही वह उनकी अपनी सीर-पट्टी पर नहीं, गाँव की पंचायती जमीन पर बना था, लेकिन उनकी इजाजत से बना था, इसलिए खाली हो जाने पर वे उस पर कब्जा कर सकते थे। उन्होंने सोच लिया था कि पंच लोग न माने, तो वे उसे चौपाल बना देंगे, पर उसका इस्तेमाल तो कर ही सकेंगे। लेकिन रधिया जब कहीं नहीं गई, तो उन्हें लगने लगा, जैसे वह उनके अपने घर पर कब्जा किए बैठी है। अहसान जताकर रधिया से कुछ और वसूल करना चाहा, तो वह भी नहीं कर सके। उलटे एक नुकसान और हो गया। सरूपा से उन्होंने चाहे जितने बरतन बनवाए, कभी दाम नहीं दिया था, लेकिन रधिया ने फोकट में बरतन देने से इनकार कर दिया। तब से मुखिया बहुत चिढ़े हुए हैं रधिया से। पंच-प्रधान लोगों को उकसाते रहते हैं कि रधिया को गाँव से निकाला जाए, लेकिन गाँव वाले रधिया का ही पक्ष लेते हैं - पड़ी रहने दो, मुखिया! विधवा है बेचारी, अपना कमाती-खाती है।

रधिया को नहीं मालूम, लेकिन गाँव के लड़कों को मुखिया ने ही रधिया के पीछे लगाया था। रधिया ने लड़कों को हाथ नहीं धरने दिया, तो उन्होंने ही गाँव के गुंडा पहलवान सोबरन को उकसाया था, "कुम्हरिया बहुत इतराकर चलती है, सोबरन। लगता है, कोई उसके कस-बल ढीले करने वाला नहीं मिला।"

नजर तो सोबरन की भी थी रधिया पर, लेकिन डरता था। मुखिया की शह पाकर उसकी झिझक जाती रही थी। उसी शाम उसके घर पानी का गगरा फूट गया था और नया गगरा लेने वह रधिया के घर जा पहुँचा था। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ था कि रधिया ने उसकी छेड़खानी का विरोध नहीं किया। गालियाँ नहीं दीं। शोर नहीं मचाया। रोने लगी। रो-रोकर उसने सोबरन को बताया कि गाँव के बड़े लोगों के लड़के उसे तंग करते हैं और वह कई दिनों से खुद ही सोबरन से उनकी शिकायत करने की सोच रही थी। सोबरन ने आश्वासन दिया था, "फिकर मत करो, राधे, अब किसी की हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ आँख उठाकर भी देखे। सब सालों को देख लूँगा मैं।"

रधिया जानती थी कि सोबरन बदमाश है। हनुमान के अखाड़े में पहलवानी करता है, लेकिन दारू पीता है, जुआ खेलता है, ठाकुर नूरसिंह की पाल्टी में होने के कारण उनके विरोधियों से लड़ाई-झगड़ा और मार-पीट करता रहता है, कोई और नहीं मिलता तो अपनी औरत को ही कसाइयों की तरह पीटता है। फिर भी उसने सोबरन का हाथ पकड़ा था और उसके बाद गाँव के लफंगे लड़को से सचमुच सुरक्षित हो गई थी।

मुखिया ने यह नहीं सोचा था कि सोबरन से रधिया की ऐसी यारी हो जाएगी। उन्हें लगा, सोबरन को जिस काम पर उन्होंने लगाया था, सोबरन ने किया नहीं। वे सोबरन से नाराज रहने लगे थे और रधिया के कस-बल ढीले करने के लिए उन्होंने अपने लड़के मलखान सिंह को प्रेरित किया था। नतीजा यह हुआ कि सोबरन और मलनखान सिंह में लड़ाई हो गई और सोबरन ने मलखान सिंह का सिर फोड़ दिया। खुंस में मुखिया ने सोबरन को झूठमूठ एक डकैती के केस में फँसा दिया। थानेदार को रुपया खिलाकर सोबरन छूट तो आया, लेकिन इसके लिए उसे मुखिया से ही कर्ज लेना पड़ा और अपने खेत रेहन रख देने पड़े। तब से वह मुखिया की पाल्टी से अलग हो गया है और बदला लेने की सोच रहा है, लेकिन मौका नहीं पा रहा है। मुखिया रधिया और सोबरन दोनों से खफा हैं, लेकिन सोबरन से डरते हैं, इसलिए अब उन्होंने धरम-करम की बातें शुरू कर दी हैं। परसों उन्होंने पंडित शिवदत्त से कहा था, "रधिया ससुरी बड़ा अनर्थ कर रही है, पंडित! हम तो समझा-बुझाकर हार गए। अब तो तुम ही उसे समझाओ। नहीं माने तो गाँव से साली का बहिष्कार कर दो।"

पंडित शिवदत्त को नहीं मालूम था कि रधिया को समझाने का मौका उन्हें इतनी जल्दी मिल जाएगा। रधिया से वे डरते भी थे। एक बार कुछ कहा था, तो रधिया ने सबके सामने उसका पानी उतार दिया था। इसलिए उन्होंने मजाक में लोगों से कहा था, "हम समझाने गए, तो तुम ही लोग कहोगे कि पंडित भी रधिया से जा फँसे।" मुखिया की चौपाल पर बैठे लोग उनकी बात सुनकर हँसे थे। कहा था, "अरे पंडितजी, तुम अब साठ से ऊपर के हुए, अब तुम क्या फँसोगे किसी से!"

मन में यह सरस वार्तालाप चल रहा है और मुँह से धाराप्रवाह उपदेश निकल रहा है। एक पंथ दो काज वाली कहावत को मन ही मन गुनते हुए पंडित शिवदत्त एक साथ दो बातें सोच रहे हैं। रधिया को समझा-बुझाकर सुमार्ग पर लाना है और मौका लगे, तो यह परीक्षा भी कर देखनी है कि इस उम्र में किसी से फँस सकते हैं या नहीं।

लेकिन रधिया ठंड में सुन्न हुई जा रही है। पैरों में चढ़ता शीत उसकी टाँगों को काठ न बना दे, इसलिए कभी एक पाँव पर जोर देकर खड़ी होती है, कभी दूसरे पाँव पर। कह कुछ नहीं रही, लेकिन समझ सब रही है। मुखिया की चौपाल पर हुई बातचीत वह सुन चुकी है। सोबरन से भी अभी यही बात करके आ रही है। सोबरन ने उसे आश्वासन दिया है, लेकिन उसने कहा है कि वह नूरसिंह को तो देख लेगा पर पंडित शिवदत्त से कुछ नहीं कह पाएगा। पंडित शिवदत्त उसके गुरु हैं। उन्हीं के हनुमान मंदिर वाले अखाड़े में वह पहलवान बना है। रधिया शिवदत्त को मँगता बामन ही कहती-मानती है, लेकिन सोबरन से बात करने के बाद उनसे डर रही है। जानती है, यह मँगता बामन गाँव के मुखिया और पंच-प्रधान लोगों से मिलकर उसे गाँव से निकलवा सकता है। अपने बालकों की चिंता है उसे। गाँव से निकाल दी गई, तो कहाँ जाएगी उनको लेकर? पीहर में भी तो कोई नहीं बचा, नहीं तो...।

"तू कुछ बोलेगी भी? हम इतनी देर से तुझसे सिर मार रहे हैं और तू एकदम चुप्प खड़ी है।" पंडित शिवदत्त जोर से डाँटते हैं, तो रधिया को लगता है, अब तो कुछ बोलना ही पड़ेगा। कहती है, "तुम ठीक कह रहे हो, पंडितजी। कान पकड़ती हूँ, अब उसकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखूँगी।"

"पर तेरा क्या विश्वास? कल को फिर तू...?"

"नहीं पंडितजी, अपने बालकों की सौंह।" जानती है कि झूठी कसम खा रही है, लेकिन इसके अलावा जान छुड़ाने का और उपाय भी क्या है? कसम खाते-खाते रुआँसी हो आई है। इस समय तो वह इस मँगते बामन के पाँव भी पकड़ सकती है। लेकिन पंडित

शिवदत्त इतने से ही संतुष्ट हो गए हैं। कहते हैं, "तो जा, अब घर जा। जिन बालकों की सौगंध खाई है, उन्हें जाकर सँभाल।"

रधिया तेज-तेज कदमों से गाँव की ओर चल दी है और पंडित शिवदत्त 'हरिओम-हरिओम' कहते हुए खेत की तरफ बढ़ गए हैं। एक पतिता को पाप से बचा लेने और स्वयं पाप में पड़ते-पड़ते बच जाने के संतोष और आनंद के साथ वे खेत की मेंढ़ पर लोटा रखकर हगने बैठ गए हैं, लेकिन रधिया का गोरा रंग और सुंदर चेहरा उनकी आँखों में बसा हुआ है। थोड़ी देर पहले रधिया और सोबरन ने खेत में बने मचान पर जो लीला की होगी, उसकी कल्पना से वे उत्तेजित हो जाना चाह रहे हैं, लेकिन जाड़े की रात में खुले मैदान की यह ठंड... हरिओम-हरिओम...।

गाँव सोया पड़ा है। बुझे हुए अलावों की राख से थोड़ी गरमाई पाते हुए कुत्तों ने रधिया की आहट पर जागकर गुर-गुर ही है, लेकिन भौंके नहीं हैं। ताल के किनारे गाँव से अलग-थलग बना रधिया का घर एकदम भूतवासा लग रहा है। एक मड़हे और एक छप्पर वाले इस घर के गज-भर ऊँची सपील से घिरे आँगन में ही चाक चलता है और उसी के एक कोने में आँवाँ सुलगता है। विधवा हो जाने के बाद से रधिया ही मिट्टी खोदने-गोड़ने से लेकर बरतन पकाने तक का सारा काम करती है। हुनर हाथ में ऐसा है कि उसे अपने बरतनों पर गेरू पोतने की जरूरत कभी नहीं पड़ी। आँच ही ऐसी देती है कि काली मिट्टी में भी दमकता हुआ लाल रंग खिल उठता है। इस समय सारा आँगन आज ही चाक से उतारे गए कच्चे सकोरों की पाँतों से भरा हुआ है। कल जब ये सूख जाएँगे, तब रधिया इन्हें पकाएगी। अभी तो ये ऐसे लग रहे हैं, जैसे इनमें चाँदनी भरने के लिए इन्हें आँगन में सजा दिया गया हो।

सकोरों को देखकर रधिया मुस्कराती है। पंडित जी की सारी धमकियाँ और सारे उपदेश बिसर जाते हैं। शाम की वह घड़ी याद आ जाती है, जब वह यहाँ बैठी चाक चला रही थी। थकान से उसकी कमर टूट रही थी, जब सोबरन ताल में बैलों को पानी पिलाकर खँखारता हुआ घर के सामने से गुजरा था। रधिया समझ गई थी और काम खत्म करने के बाद वह बेहद ठंड के बावजूद गरम पानी और खुशबूदार साबुन से नहाई थी। बच्चों को खिला-पिलाकर उन्हें सुलाते हुए खुद भी थोड़ी देर ऊँघ ली थी कि रात भी हो जाए और कुछ थकान भी उतर जाए। फिर अपने-आप ही जागी थी और घर का दरवाजा भेड़कर दबे पाँव निकल गई थी। खेत में सोबरन उसकी प्रतीक्षा में जागता मिला था। रधिया ने मचान के नीचे पहुँचकर सियार की बोली उतारी थी और सोबरन हुर्र करता हुआ फौरन उठ बैठा था। वह मचान पर चढ़ गई थी और जब सोबरन ने उसे

अपनी रजाई में लेकर सीने से चिपटाया था, ठंड के मारे उसके दाँत बज रहे थे और उत्तेजना में उसकी रग-रग काँप रही थी।

वह सुख मिट्टी हो चुका है। ठंड से काँपती हुई रधिया चुपके से घर में घुसती है। देखती है, दोनों बच्चे चैन से सो रहे हैं। वह अपनी खाट पर रजाई में दुबक जाती है। रजाई ठंडी है और रधिया के पैर तो बरफ हो रहे हैं। जब तक बाहर थी, इतनी ठंड नहीं लग रही थी, लेकिन रजाई ओढ़ लेने के बाद अब उसके दाँत किटकिटा रहे हैं। थोड़ी देर वह पंडित शिवदत्त की बातों पर विचार करती है, लेकिन उसे पता नहीं चलता कि कब रजाई भरक गई, कब उसकी कँपकँपी बंद हुई और कब उसे नींद आ गई।

पंडित शिवदत्त रधिया को समझाकर ही संतुष्ट नहीं हुए। न जाने उन्हें क्या सूझा कि जंगल-झाड़े से निबटकर खाली लोटा लटकाए खेत की मेढ़-मेढ़ चलते वे सोबरन के मचान तक जा पहुँचे। सोबरन खर्राटे भर रहा था, पंडित शिवदत्त की ललकारती-सी आवाज सुनकर जागा। लाठी सँभालकर ऊपर से झाँकता हुआ बोला, "कौन है?" और पंडित शिवदत्त को पहचानकर बोला, "क्या बात है, गुरूजी?" कहता हुआ अपनी रजाई लपेटे नीचे उतर आया। मन में खुटका तो हो रहा था कि पंडित ने शायद रधिया को यहाँ से जाते देख लिया है, लेकिन यह नहीं जानता था कि वे इस बात को इतना तूल देंगे।

"तुमको शरम नहीं आती, सोबरन?" पंडित शिवदत्त कोई भूमिका बाँधे बिना लताड़ने लगे, "घर में सुंदर-सुशील बहू है, ठाकुर नेगसिंह जैसे मातबर आदमी के तुम लड़के हो, हमारे अखाड़े में बीस बरस ब्रह्मचारी रहकर तुमने पहलवानी और हनुमान-पूजा की है, और एक नीच कुम्हारिन पर अपना ईमान बिगाड़ लिया है तुमने, ऐं?"

सोबरन कुछ बोला नहीं, पर उसे हँसी आ गई। आधी रात को, इतनी ठंड में, और इस तरह सुनसान खेत में आकर, सोबरन को सोते से जगाकर पंडितजी यह सब कहेंगे, यह बात उसे बहुत ही मजेदार लगी।

लेकिन पंडित शिवदत्त पगला रहे थे। पहले वे रधिया की नीचता बताते रहे, फिर न जाने क्या हुआ कि बोले, "रधिया के पास ऐसा क्या है, जो तुम्हारी बहू के पास नहीं है?" इसके बाद वे रधिका के अंग-प्रत्यंग की तुलना सोबरन की बहू से करने लगे। अपने जाने वे सोबरन को सुमार्ग पर लाने के लिए ही ऐसा कर रहे थे, लेकिन सोबरन को उनके मुँह से रधिया की छातियों के साथ अपनी बहू की छातियों का बखान अच्छा नहीं लगा। उसे गुस्सा आ गया। उसने अपनी रजाई उतार फेंकी और पंडित शिवदत्त को उठाकर खेत में पटक दिया। गेहूँ और सरसों के हाथ-हाथ भर ऊँचे पौधों पर जमी

ओस में पंडित शिवदत्त नहा-से गए और भयार्त स्वर में चिल्लाने लगे। सोबरन ने उनका मुँह बंद कर दिया और बुढ़ऊ कहीं मर न जाए, इस डर से उन्हें पीटने के बजाय झकझोरकर बोला, "कहे देता हूँ पंडित, आगे कुछ बोले तो जबान खेंच लूँगा। सोबरन को समझ क्या रखा है तुमने? अब खैर चाहते हो, तो चुपचाप चले जाओ यहाँ से।"

पंडित शिवदत्त लटपटाते हुए उठकर चले गए। बासठ की उम्र हुई, आज तक इतना अपमान उनका कभी नहीं हुआ। भृगु, विश्वामित्र और दुर्वासा जैसे तमाम क्रोधी ऋषि-मुनियों को याद करते हुए वे खेत से निकलकर दगड़े में आए और घूमकर खड़े हो गए। मचान के नीचे सोबरन अभी भी खड़ा था। ठाकुर के लौंडे ने ब्राह्मण पर हाथ उठाया। पंडित शिवदत्त को अपने अंदर परशुराम की आत्मा उतरती महसूस हुई और उन्होंने खाली लोटे को फरसे की तरह उठाकर चिल्लाते हुए प्रतिज्ञा की, "तेरा वंश न मेट दिया तो नाम शिवदत्त नहीं।"

खेत में छाई खामोशी पर तैरते उनके शब्द दूर खड़े सोबरन तक पहुँचे और वह दगड़े की तरफ बढ़ा। लेकिन उसकी आकृति हिलती दिखाई दी, तो पंडित शिवदत्त फिर से पकड़ लिए जाने के डर से गिरते-पड़ते गाँव की तरफ दौड़ पड़े।

पंडित शिवदत्त चले गए, पर सोबरन को नींद नहीं आ रही है। वह मचान पर बनी झोंपड़ी में घुसकर रजाई ओढ़कर बैठ गया है और बीड़ी फूँक रहा है। सुन रहा है कि नीचे खेत में कोई जानवर घुस आया है और चर रहा है, लेकिन वह उसे भगाने के लिए उठ नहीं पा रहा है। लड़ाई-झगड़ा उसके लिए नई चीज नहीं है, लेकिन पंडित शिवदत्त पर हाथ उठाना उसे अखर रहा है। अपने गुस्से को सही ठहराने के लिए वह पंडित शिवदत्त की बातें याद कर रहा है, लेकिन उनकी बातें उसे गलत भी लग रही हैं और सही भी। रधिया और अंगूरी की जिस तुलना पर वह बिगड़ उठा था, खुद तब से कई बार कर चुका है। रधिया कभी उन्नीस लगती है, कभी इक्कीस। अंगूरी उसकी बहू है, रधिया से ज्यादा जवान है, उसके लड़के की माँ है। फिर रधिया? लेकिन रधिया में जो बात है, अंगूरी में नहीं। रधिया प्यार करती है, अंगूरी अधिकार जमाती है। अंगूरी सोबरन के दारू पीने पर चिढ़ती है और लड़ती है, रधिया दारू को बुरा नहीं समझती, बल्कि पीने के लिए दो-चार रुपये भी दे देती है। आज भी तीन रुपये दे गई है। लेकिन... सोबरन को लगता है, बात सिर्फ देह और दारू की नहीं, बात कुछ और है। लेकिन क्या?

उसे रधिया की बातें याद आ रही हैं। मुखिया उसे गाँव से निकाल देने की फिराक में हैं, यह सोबरन भी जानता है। लेकिन वह इसमें क्या कर सकता है? रधिया का कोई

कानूनी हक तो यहाँ है नहीं। और होता भी तो क्या? कानून तो पैसे का है सब। मेरे ही मामले में क्या हुआ? झूठा मुकद्दमा था, फिर भी जेल हो गई होती, अगर पैसा न होता... और पैसा तो साले मुखिया जैसे लोगों के पास ही है। उनकी पहुँच भी ऊपर तक है। थाना-कचहरी से लेकर असेंबली तक। सोबरन उनसे अपनी ही लड़ाई नहीं लड़ पा रहा है, रधिया के लिए कैसे लड़े?

मगर उसकी यह कमजोरी रधिया जाने, यह सोबरन को मंजूर नहीं। वह कौन होती है उस पर ताना कसने वाली कि वह कुछ नहीं कर सकता? अरे, जब मैं कह रहा हूँ कि मैं सब देख लूँगा तो विश्वास कर। नहीं करती तो मर। उस मास्टर साले को बीच में क्यों लाती है?

दरअसल गुस्सा सोबरन को मास्टर पर ही था, मारे गए पंडित शिवदत्त। रधिया ने सोबरन को कच्चा पड़ता देख कहा था, "देख लो, सोबरन, कहीं मास्टर की ही बात सच्ची न निकले कि तुम कुछ नहीं कर पाओगे।"

सोबरन ने रधिया को डाँट दिया था, "उस पाजी की बात मत करो, राधे! मैं उसका नाम भी तुम्हारे मुँह से नहीं सुनना चाहता।" रधिया हँस दी थी, "मैं उसका नाम क्यों लूँ, बात आई तो मैंने कह दी। तुम्हें नहीं पसंद है, तो छोड़ो। पर यह सोच लो कि अब तुम्हें कुछ करना जरूर पड़ेगा। मुखिया मुझे गाँव से निकालने पर तुले हैं।"

रधिया हँस दी थी और सोबरन ने कह दिया था, "तुम फिकर मत करो, मैं सब देख लूँगा।" लेकिन कहते समय उसे लगा था कि वह झूठ बोल रहा है और रधिया उस झूठ को समझ रही है। रधिया के जाने के बाद भी सोबरन इस अहसास से तिलमिला रहा था। उसे लगा, मास्टर से रधिया की बातचीत आजकल कुछ ज्यादा ही होने लगी है। मास्टर जरूर उसे मेरे खिलाफ भड़काता होगा।

"मुखिया के खिलाफ तुम कुछ नहीं करोगे। तुम्हें अपने मौज-मजे से फुर्सत मिले तब न!" गाँव के स्कूल में पढ़ाने आने वाले मास्टर की यह बात सोबरन को अक्सर याद आती है। हालाँकि मास्टर ने उसका कभी कुछ बुरा नहीं किया, फिर भी उसे मास्टर पर गुस्सा आता है। उसकी समझ में नहीं आता कि जब दुनिया में सभी बदमाश हैं, तो मास्टर ही एक शरीफ कैसे हो सकता है? फिर गाँव के लोग आनगाँव के इस आदमी की इतनी इज्जत क्यों करते हैं? यहाँ तक कि मुखिया भी उससे दबते हैं, जबकि वह खुलेआम मुखिया की मुखालफत करता है। बातें उसकी सोबरन को भी सही लगती हैं, लेकिन उसमें कुछ ऐसा है कि सोबरन को उससे डर लगता है। और डेढ़ पसली के उस आदमी से सोबरन डरना नहीं चाहता। हालाँकि मास्टर से डरने की कोई बात नहीं है,

मास्टर जब भी मिलता है, हँसकर बात करता है, लेकिन उसकी बातों में कुछ ऐसा होता है कि सोबरन उसके सामने खुद को बहुत छोटा और कमजोर समझने लगता है। यह चीज उसे तिलमिला देती है। तिलमिलाकर वह गुस्से से भर उठता है। गुस्से में किसी से लड़ाई-झगड़ा कर लेता है। कोई और नहीं मिलता, तो अंगूरी को ही पीट देता है। अपने लड़के को ही मार बैठता है। फिर भी तिलमिलाहट जाती नहीं। दारू पीता है, रधिया को भोगता है, फिर भी नहीं। भीतर एक आग-सी लगी रहती है। सोचता है, जब तक नूरसिंह से बदला नहीं ले लेगा, यह आग बुझेगी नहीं। लेकिन मुखिया नूरसिंह रात-बिरात कभी निकलते नहीं, निकलें भी तो तमंचा हर वक्त उनकी जेब में रहता है।

इसी उधेड़-बुन में पड़ा सोबरन जागता रहा और बीड़ियाँ फूँकता रहा। उसके लिए यह एक अजीब और परेशानी वाली बात थी। वह कभी उधेड़-बुन में नहीं पड़ता। या तो सीधा सोचता है, या सोचता ही नहीं। सही-गलत जो होता है, कर डालता है। भुगतना पड़ता है, तो भुगत लेता है। चिंता और पहलवानी का कोई साथ नहीं।

हारकर सोबरन ने सीधी बात सोच ली है : सुबह होते ही वह पंडित शिवदत्त के पास जाएगा। उनके चरण छूकर क्षमा माँगेगा। रधिया का जो होना हो सो हो, उसकी परवाह नहीं करेगा। सोबरन ने उसकी सुरक्षा का ठेका थोड़े ही ले रखा है! मास्टर के गुण गाती है, तो जा, मास्टर से मदद माँग। मास्टर की भगतिन... साले को मारा नहीं तो नाम सोबरन नहीं!

सुबह रोज की-सी सुबह थी। रात को जो घटना खेत में घट गई थी, उसका रंचमात्र भी प्रभाव रधिया के मन पर नहीं था। आँख खुलने पर राधे-राधे कहकर बातें करने वाले सोबरन की आवाज उसके कानों में जरूर गूँजी थी, उठकर अँगड़ाई लेते समय एक सुखद सिहरन भी उसने महसूस की थी, दगड़े में खड़े पंडित शिवदत्त का उपदेश भी उसे याद आया था, लेकिन इस सबको उसने मन पर टिकने नहीं दिया था।

रोज की तरह उठी और बाजरा पीसने बैठ गई। पीसती रही और जो मन में आया, गाती रही। बच्चों के जागने का समय हुआ, तो छप्पर के नीचे बने चौके में आकर चूल्हा चेताया और पानी का बटुला गरम होने को रख दिया। ठंडे पैरों को आँच के सामने रखकर तपाने लगी। अरहर की सूखी डंडियाँ भरभराकर जल रही थीं और लपट लेती आँच को देखना उसे अच्छा लग रहा था। कल खरीदी हुई गुड़ की भेली उसके ध्यान में थी और वह सोच रही थी कि बालक उठ जाएँ, तो उनके लिए बाजरे का मीठा दलिया पका देगी।

तभी पाँच बरस की उसकी बिटिया उसके पास आ बैठी। रधिया ने ओढ़ा हुआ खेस खोलकर बेटी को ढक लिया और अपने साथ सटा लिया। फिर बोली, "अपने मास्साब की बात भूल गई, बिट्टो?"

सुनकर बिट्टो को सहसा ध्यान आया और उसने मुस्कराते हुए छोटे-छोटे हाथ जोड़कर माँ से कहा, "अम्मा, नमस्ते।"

रधिया खिल उठी। बिट्टो पर असीसें बरसा दीं। आशीर्वादों में बिट्टो खूब बड़ी हो गई, पढ़-लिखकर मास्टरनी बन गई, अच्छे-से दूल्हे के साथ उसकी शादी भी हो गई। बिट्टो ने माँ की गोद में लेटकर आँखों में बची रह गई नींद में फिर सपने खोजना शुरू कर दिया, लेकिन माँ चुप होकर चूल्हे में लकड़ियाँ सरकाती हुई, आँच की लपटों को एकटक देखने लगी।

माँ का सपना बहुत बड़ा है, इसलिए खुली आँखों से देखना पड़ता है उसे। वह जानती है कि एक मेहनत-मजूरी करने वाली, नीच जात, अकेली विधवा को अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर किसी लायक बनाने का सपना नहीं देखना चाहिए, लेकिन वह देखती है। वह जानती है कि उसका सपना कहीं भी टूट सकता है या तोड़ दिया जा सकता है; लेकिन कच्चे बरतन टूट जाएँगे इस डर से क्या कोई बरतन बनाना छोड़ देता है? उसके बच्चे तो चाक पर चढ़ी गीली मिट्टी हैं। वह उन्हें अच्छे से अच्छा बनाकर चाक से उतारेगी, बढ़िया से बढ़िया आँच देकर उन्हें पकायेगी, सुंदर से सुंदर बेल-बूटों से उन्हें सजाएगी।

स्कूल में बिट्टो को दाखिल कराने गई थी, तो उसने मास्टर से कहा था, "खूब अच्छी तरह पढ़ाना, मास्टर, मैं अपनी बिट्टो को मास्टरानी बनाऊँगी।"

मास्टर एक विधवा कुम्हारिन की इस महत्वाकांक्षा पर मुस्कराया था। मूँछों में हँसते हुए उसने कहा था, "सो तो ठीक है, रधिया, लेकिन यह ठहरी लड़की जात। मास्टरनी बन भी गई, तो क्या इसकी कमाई तुम्हारे हाथ आएगी?"

रधिया बात समझकर भी तिलमिलाई नहीं थी। हँसकर कहा था, "इतने गगरे-सुराहियाँ बनाती हूँ, मास्टर, सबका ठंडा पानी मैं ही पीती हूँ क्या? और तुम भी तो यही काम करते हो। तुम्हारे पढ़ाए हुए बालकों में से कोई मास्टर बनेगा, कोई पटवारी, कोई थानेदार। क्या उनकी कमाई तुम्हें खाने को मिल जाएगी?"

मास्टर अचकचाकर रधिया का मुँह देखने लगा था। रधिया जैसी औरत के मुँह से ऐसी ज्ञान की बात सुनने की उम्मीद उसे नहीं थी। उस समय कुछ नहीं कहा था उसने, पर एक दिन बिट्टो ने स्कूल से लौटकर माँ को बताया था कि मास्साब ने क्या कहा है - अपनी माँ से खूब प्यार किया करो। रोज सुबह उठकर नमस्ते किया करो। तुम्हारी माँ बहुत समझदार औरत है।

रधिया चूल्हे की आँच को देखती है और मुस्कराती है। अपने बारे में सोचती है -कितनी गिरी हुई और बदनाम औरत है वह, लेकिन कोई तो है, जो उसे ठीक समझता है। मास्टर के लिए उसके मन में आदर ही आदर है। उसे वह बिट्टो के संदर्भ से ही नहीं, अपने संदर्भ से भी जानती है।

गाँव में सोबरन के साथ रधिया को सबसे पहले मास्टर ने ही देखा था। उस दिन मास्टर को गाँव में कुछ देर हो गई थी। शाम के झुटपुटे में रेतीले दगड़े में अपनी साइकिल रौंदता वह अपने गाँव जा रहा था कि अमराई के साथ वाले अरहर के खेत में से सोबरन और रधिया अचानक एक साथ निकल पड़े थे। गाँव में अरहर के खेत बदनाम होते हैं। रधिया के साथ सोबरन को अरहर के खेत से निकलते देख अनुमान के लिए कुछ बचा ही नहीं था। मास्टर मुस्कराता हुआ आगे बढ़ गया था, लेकिन सोबरन ने उसे पुकार लिया था, "सुनो मास्टर!" और मास्टर के रुक जाने पर सोबरन ने पास आकर उसकी साइकिल का हैंडिल पकड़ लिया था। कहा था, "तुमने देख तो लिया और देखकर मुस्करा भी लिए, पर आगे बात फैली, तो इस गाँव में मास्टरी नहीं कर पाओगे। मेरा नाम सोबरन है।"

धमकी तगड़ी थी, क्योंकि सोबरन तगड़ा था, लेकिन मास्टर हँस दिया था। बोला, "हाँ, भाई, तुम सोबरन ही हो। मैं तुम्हें जानता हूँ। नामी पहलवान हो। लेकिन गाँव में शायद एक सोबरन और भी तो है, जो किसी डकैती-वकैती में पकड़ा गया था? सुना है, वह थानेदार के जूते चाटकर जेल जाने से बच आया था।" सोबरन को झटका लगा था, लेकिन मास्टर उसे बोलने का मौका दिए बिना कहता गया था, "मुझे तो तुम यहाँ मास्टरी करने नहीं दोगे, पर नूरसिंह ने तुमको डाके में फँसाकर जबर्दस्ती तुम्हारे खेत रेहन रख लिए, तब तुम्हारी मर्दानगी कहाँ गई थी?"

"उस बात से तुमको कोई मतलब नहीं, मास्टर!" सोबरन को गुस्सा चढ़ आया था और साइकिल के हैंडिल को झकझोरते हुए उसने कहा था, "तुमने मेरे खिलाफ कुछ किया, तो काटकर नहर में फेंक दूँगा।"

"तुम्हारा क्या खयाल है, मैं तुम्हारे खिलाफ क्या करूँगा?" मास्टर ने गंभीर होकर पूछा था।

"बदनामी करोगे, और क्या करोगे तुम! पर मैं भी देख लूँगा।"

"निश्चिंत रहो, तुम्हारी बदनामी करते फिरने की मुझे फुरसत नहीं है। लेकिन तुम्हें देखना ही हो, तो अपने को देखो। क्या हो तुम? अच्छे-भले किसान के लड़के थे, दारूबाजी और गुंडागर्दी में पड़ गए और जिनके लिए लड़े-मरे, उन्हीं के बनाए झूठे मुकद्दमे में फँसकर अपनी जमीन से हाथ धो बैठे। अपने ही खेतों में तुम ठाकुर नूरसिंह के नौकर बनकर रह गए हो, इस चीज को भी देखते हो तुम?"

"सब देख रहा हूँ, मास्टर! मौका देख रहा हूँ। नूरा को एक दिन ठिकाने लगाकर ही रहूँगा। देख लेना।"

"देख लिया! मुखिया के खिलाफ तुम कुछ नहीं करोगे। तुम्हें अपने मौज-मजे से फुरसत मिले तब न!" कहते हुए मास्टर ने सोबरन का हाथ पकड़कर अपनी साइकिल के हैंडिल से हटा दिया था।

रधिया देखती रह गई थी। सोबरन कुछ नहीं बोल पाया था। सोबरन को किसी के सामने इतना फीका पड़ते रधिया ने कभी नहीं देखा था। उसे आश्चर्य हुआ था, इस पतले सींक-से आदमी में कौन-सी ताकत है, जो सोबरन जैसे खूनी आदमी का हाथ झटककर चला गया? रधिया की समझ में एक ही बात आई थी कि मास्टर के पास विद्या है और विद्या की ताकत सोबरन की खूनी ताकत से बड़ी है। उसने सोचा था, अगर वह पढ़ी-लिखी होती और कहीं मास्टरानी होती, तो क्या उसे किसी से डरना पड़ता?

उस दिन से रधिया मास्टर की इज्जत करने लगी थी और उसे अपनी बिट्टो को मास्टरनी बनाने की धुन सवार हो गई थी। और जिस दिन से रधिया ने बिट्टो के मुँह से मास्टर द्वारा की गई अपनी प्रशंसा सुनी है, वह उसका और भी आदर करने लगी है। मास्टर सुबह-शाम गाँव में आते-जाते रधिया के घर के सामने से ही गुजरता है। स्कूल रधिया के घर से जरा दूर है, इसलिए जाते समय बिट्टो को साइकिल पर बिठा ले जाता है, लौटते समय छोड़ जाता है। रधिया से दो-चार बातें भी कर लेता है।

एक दिन उसने पूछा था, "सोबरन तुम्हें कैसा आदमी लगता है, रधिया?"

"मेरे लिए तो अच्छा ही है, मास्टर!"

"उसे दारू-पानी के लिए पैसा तुम देती हो?"

"कभी-कभार हाथ में कुछ रह जाता है तो...।" रधिया सकुचा गई थी। उस दिन मास्टर से न जाने क्यों उसे कुछ डर-सा लगा था। लेकिन मास्टर ने फिर और कुछ नहीं पूछा था, मुस्कराकर रह गया था। रधिया का मन हुआ था, कह दे - सोबरन का हाथ मैंने अपनी हिफाजत के लिए पकड़ा है, मास्टर! गाँव के लोगों को तो तुम जानते हो, उनका बस चले तो मुझे चींथकर खा जाएँ। सोबरन बदमाश आदमी है, उससे सब डरते हैं, इसीलिए उसकी होकर रहती हूँ। इसीलिए चार पैसे भी उस पर खरच देती हूँ। लेकिन मास्टर से यह सब कह नहीं पाई थी। कहना जरूरी भी नहीं लगा था। सोचा था, मास्टर इतना विद्वान आदमी है, क्या इतनी बात नहीं समझता होगा?

"सोबरन की बहू को यह सब मालूम है?" मास्टर ने पूछा था।

"मालूम है। एक दिन आकर मुझसे लड़ी भी थी, पर सोबरन ने उसे पीट दिया था। फिर नहीं आई। हाँ, राह-बाट कभी मिल जाती है, तो गालियाँ देती है। मैं जवाब नहीं देती।"

"ऐसा कब तक चलेगा, रधिया?"

"जब तक जिंदा हूँ, जब तक ये हाथ-गोड़ चलते हैं, तब तक ऐसा ही चलेगा, मास्टर! मेरे लिए दुनिया में और कहीं ठौर नहीं है। बस, ये बालक पल जाएँ, कुछ पढ़-लिख जाएँ।" रधिया ने कहा था और फिर एकाएक पूछ लिया था, "बिट्टो कुछ पढ़ती-पढ़ाती है कि नहीं?"

"पढ़ती तो है, पढ़ाने भी लगेगी कभी।"

"मास्टरानी बन जाएगी?"

"तुम बनाना चाहती हो, तो क्यों नहीं बनेगी? तुम मास्टरनी की अम्मा जरूर बनोगी।"

तब से मास्टर रधिया को 'मास्टरनी की अम्मा' कहने लगा है। रधिया को उसका यह मजाक अच्छा लगता है। एक दिन उसने भी मजाक में कहा था, "तुम इतने बड़े, ऊँची जात के और बाल-बच्चों वाले न होते और मेरी बिट्टो बड़ी होती, तो तुमसे उसका ब्याह कर देती। फिर बिट्टो को मास्टरानी बनाए बिना ही मास्टरानी की अम्मा बन जाती।" मास्टर ने रधिया को झिड़क दिया था। कहा था, "क्या बात करती हो! बिट्टो मेरी छोटी लड़की के बराबर है।"

एक दिन इसी तरह हँसते और बातें करते उन्हें किसी ने देख लिया था और सोबरन से जाकर कह दिया था। सोबरन ने रधिया पर गुस्सा किया था। कहा था, "अब मास्टर से आँख लड़ाने लगी हो?" रधिया नाराज हो गई थी। धारदार जबान से कह दिया था, "होश की बात करो, सोबरन! अव्वल तो ऐसी कोई बात है नहीं, और हो भी तो मैं तुम्हारी ब्याहता नहीं हूँ। तुमसे कुछ लेती नहीं हूँ, तुम्हें कुछ दे ही देती हूँ।"

कहने को कह गई थी, लेकिन कहने के बाद डर गई थी। सोबरन कहीं कुछ कर न डाले। इतनी बात कौन मर्द बर्दाश्त करेगा? लेकिन सोबरन बेशरम-सा हँस दिया था और रधिया की खुशामद करने लगा था। उस रात रधिया को सोबरन - वही गुंडा पहलवान, जिससे सारा गाँव डरता था - एकदम नामर्द-सा लगा था और रधिया को अपनी चिंता हो आई थी। मुखिया अगर मुझे गाँव से निकाल देने पर तुल जाएँ, तो क्या वह मुझे बचा लेगा? और कोई सहारा न देख उसने अपने डर को मन में ही दबा लिया था। लेकिन उस रात सोबरन के साथ का सुख रधिया को सुख-सा नहीं लगा था।

कल रात भी कुछ-कुछ ऐसा ही...।

अंदर से छोटे बच्चे के जागकर रोने की आवाज सुनकर सोच में डूबी रधिया का ध्यान भंग हुआ। गोद में ऊँघती बिट्टो को जगाकर उसने कहा, "उठ बिट्टो, लाला जाग गया है। तू यह गरम पानी ले ले। हाथ-मुँह धोकर स्कूल जाने को तैयार हो।"

मास्टर ओस-भीगे दगड़े में साइकिल चलाता हुआ खेतों के बीच से निकलकर गाँव की तरफ आ रहा है। तेजी से चलती हुई उसकी साँस धुएँ की शक्ल में बाहर निकल रही है। नौ बजने वाले हैं और धूप निकल आई है, लेकिन रात कोहरा इतना घना पड़ा है कि अभी तक नहीं छँटा है। मास्टर ताल की ओर देखता है। कोहरे को भेदकर जल तक पहुँचती किरणों का दृश्य उसे अच्छा लगता है। जल पर भाप-सी उठ रही है, जैसे ताल में नहाने के लिए गरम किया हुआ पानी भरा हो।

मास्टर मुग्ध होकर ताल की तरफ देख रहा था, इसलिए देख नहीं पाया कि सोबरन कब सामने आ गया और कब उसने पास आकर उसकी साइकिल को पकड़ लिया। मास्टर ने चौंककर देखा और दारू की तीखी गंध उसके नथुनों में घुस पड़ी।

कोई और होता तो डर जाता, लेकिन मास्टर को सोबरन से डर नहीं लगता। सोबरन सामने आता है, तो मास्टर को हँसी आने लगती है। सोचता है, यह बैल कभी नहीं समझ पाएगा कि इसकी जिंदगी किस तरह बर्बाद हो रही है। पंडित शिवदत्त के धर्म और ठाकुर नूरसिंह की राजनीति के मिक्सचर ने इसे एक तरफ निहायत बौड़म,

निकम्मा और डरपोक बना दिया है, तो दूसरी तरफ एकदम लंपट, हिंसक और दुस्साहसी। ऐसे लोगों से किस तरह पेश आया जाता है, मास्टर को मालूम है। सोबरन की चर्चा चलने पर वह कहा करता है, "ऐसे लोगों से डरे तो मरे।"

"आज सुबह-सुबह कहाँ से पी आए, ठाकुर सोबरन सिंह?" मास्टर ने साइकिल से उतरकर मुस्कराते हुए कहा, "लगता है, रधिया आजकल पैसे कुछ ज्यादा देने लग गई है!"

क्षण-भर पहले तक सोबरन का खयाल था कि वह मास्टर को मारेगा। इतना मारेगा कि मास्टर इस गाँव में आना भूल जाएगा। वह काफी देर से पुलिया पर बैठा मास्टर की ही प्रतीक्षा कर रहा था, जिसकी बातों ने उसे सारी रात सोने नहीं दिया था। रात को ही उसने एक सीधी बात सोच ली थी : रधिया के खयाल के साथ मास्टर का खयाल आता है और यह ठीक नहीं है, इसलिए वह मास्टर को मारेगा। इसके बाद कुछ भी सोचना जरूरी नहीं था। रात को रधिया तीन रुपये दे गई थी। खेत से उठकर सोबरन सुबह सीधा छिद्दा के घर चला गया था, जिसके यहाँ कच्ची दारू खिंचती और बिकती है। तीन रुपये में जितनी आ सकती थी, खडे-खड़े पीकर सोबरन चला आया था और मास्टर को मारने के लिए पुलिया पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा था। लेकिन मास्टर की बात सुनकर वह भौंचक-सा बस उसे देखता रह गया। न हाथ उठा, न मुँह से कोई गाली निकली। उसे लगा, यह सुबह-सुबह ठंड में खाली पेट नशा कर लेने के कारण है।

"पुलिया पर बैठो और धूप खाओ।" मास्टर ने कहा और साइकिल खड़ी कर दी। सोबरन के हाथ से हैंडिल छुड़ाया और उसे पकड़कर पुलिया पर ले आया। बिठाकर चलने लगा था कि सोबरन औंधे मुँह उसके पैरों पर गिर पड़ा। मास्टर ने समझा, नशे के कारण गिर गया है। उठाने की कोई जरूरत न समझकर उसने अपने पैर खींचे, लेकिन देखा कि सोबरन उसके पैर पकड़े हुए है और कह रहा है, "मुझे माफ कर दो, गुरूजी! अब कभी तुम पर हाथ नहीं उठाऊँगा।"

मास्टर मुस्कराया। बोला, "चलो, कर दिया माफ। अब उठो।"

"नहीं-नहीं, पहले वचन दो, वचन।"

"क्या वचन लेना चाहते हो मुझसे?"

"नहीं, पहले वचन दो, वचन।"

"अच्छा, वचन दिया। अब बोलो, क्या चाहते हो?"

कुछ देर मास्टर उत्तर की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। कोई जवाब नहीं आया, तो उसने झुककर सोबरन को उठाया। सोबरन की आँखें बंद थीं और मुँह में दगड़े की धूल भरी हुई थी। वह या तो सो गया था, या बेहोश हो गया था। उसे वहीं छोड़कर मास्टर गाँव की तरफ चल दिया।

रधिया का घर रास्ते में ही पड़ता है और स्कूल जाने के लिए तैयार बिट्टो अक्सर मास्टर को घर के बाहर खड़ी मिलती है। बिट्टो को अपने साथ स्कूल ले जाना मास्टर का नियम-सा बन गया है। लेकिन यह क्या? आज बिट्टो नहीं, रधिया के घर के सामने गाँव के कई लोग खड़े दिखाई दे रहे हैं। पंडित शिवदत्त, चौधरी रामसेवक, मुखिया नूरसिंह, और भी कई लोग। घूँघट वाली एक औरत हाथ नचा-नचाकर ऊँची आवाज में रधिया को गालियाँ दे रही है, "तेरे बालकों को साँप डस जाए, नासपीटी नागिन! रंडी, छिनाल, मेरा ही आदमी रह गया था तेरी आग बुझाने को?"

मास्टर ने साइकिल से उतरकर देखा, रधिया छोटे बच्चे को गोद में चिपकाए और एक बाँह से बिट्टो को अपने-से सटाए अंदर दरवाजे के पास खड़ी भय से काँप रही है। पंडित शिवदत्त ने बिना पूछे ही मास्टर को बता दिया कि गालियाँ देने वाली औरत सोबरन की बहू है, कि रात को उन्होंने अपनी आँखों से रधिया को सोबरन के खेत में देखा था, कि सोबरन सुबह खेत से घर नहीं लौटा और खेत पर भी नहीं है। मास्टर को स्थिति से अवगत कराने के बाद पंडित शिवदत्त रधिया की ओर मुड़ गए, "अब बोलती क्यों नहीं? कहाँ भेज दिया है सोबरन को?"

मास्टर कुछ कहता कि गाँव के दो-तीन लोग उसे खींचकर एक तरफ ले गए। संतू धीमर जल्दी-जल्दी कहने लगा, "मास्साब, मुखिया लोग रधिया को गाँव से निकालने की मिसकौट करके आए हैं। हमारे खयाल से इन्होंने सोबरन को कहीं छिपा दिया है और उसकी बहू को भड़काककर यहाँ ले आए हैं। अब बताओ, क्या किया जाए?"

"तुम मेरे साथ आओ।" मास्टर ने संतू से कहा। दूसरों से वहीं रुकने को कहकर उसने साइकिल वहीं खड़ी कर दी और संतू के साथ पुलिया की ओर चल दिया।

मुखिया नूरसिंह उस समय रधिया से कह रहे थे, "तुझे क्या हम जानते नहीं हैं! तू कुछ भी कर सकती है। तू तो ऐसी है कि जिंदा आदमी को खा जाए। अब सीधे-सीधे बता दे कि सोबरन कहाँ है, नहीं तो पुलिस बुलाकर जूते पड़वाऊँगा साली पर।"

रधिया चुप है। उसकी चुप्पी से अंगूरी का हौसला और बढ़ गया है। गालियाँ बकती हुई वह रधिया के घर में घुस आई है। आँगन में सूखने के लिए रखे सकोरों को उसने लात मारकर इधर-उधर छितरा दिया है। पाँव पटक-पटककर उन्हें तोड़ रही है। रधिया क्रोध से थरथर काँपती हुई भी अपनी मेहनत की यह बरबादी देख रही है, मगर चुप है। अपनी जगह से हिल भी नहीं पा रही है। बच्चों को उसने और ज्यादा अपने साथ सटा लिया है। शायद वह खतरे को भाँप गई है कि अंगूरी अब उसके बच्चों पर झपटने वाली है। लेकिन उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि जब रात को वह सोबरन को अच्छा-भला छोड़ आई थी, तो सुबह होते ही वह कहाँ चला गया? क्यों चला गया? और चला गया, तो क्या इसका दुख रधिया को नहीं होगा? जिसकी छाया में वह अपने को सुरक्षित समझती है, उसे वह कहाँ भेज देगी? क्यों भेज देगी? फिर ये लोग उसके पीछे क्यों पड़े हैं?

रधिया के कच्चे सकोरों को चूर-चूर करने के बाद अंगूरी रधिया पर झपटी और गोद के बच्चे को छीनने लगी। अब उसे घूँघट का खयाल नहीं रह गया था और क्रोध में बिफरती हुई वह रधिया को एकदम डायन लग रही थी। लगता था, बच्चा उसके हाथ आ गया, तो वह उसे धरती पर पटककर मार डालेगी या दूर ताल में फेंक देगी। छीना-झपटी में छोटा बच्चा चीखा, तो घबराकर बिट्टो भी चीखने लगी। बच्चे को छीनने के लिए जब अंगूरी रधिया को नोचने-काटने लगी, तो रधिया उसे धक्का देकर चीख उठी, "छोड़ मुझे, चुड़ैल! मुझे क्यों खाने आ रही है? तेरा आदमी मेरी गाँठ में तो बँधा नहीं है। घर में बैठा हो, तो तू खुद जाकर देख ले।"

एक तरह से खुद ही अंगूरी को अपने घर के भीतर ठेलकर रधिया बाहर घेर में निकल आई। जबान खुल ही गई, तो अब क्या है! वह एक-एक को देख लेगी। गाँव के पंच-प्रधान लोगों से उसे नफरत हो रही थी, जो सोबरन की बहू को समझाने के बजाय खड़े-खड़े तमाशा देख रहे थे। सबसे ज्यादा नफरत हो रही थी उसे पंडित शिवदत्त से। रात को कैसे उपदेश दे रहे थे, और अब झूठा इल्जाम लगा रहे हैं कि मैंने सोबरन को कहीं भगा दिया है। मैं कहाँ भगा दूँगी उसे?

बाहर आकर उसने पंडित शिवदत्त को लताड़ा, "क्यों रे मँगते, तूने ही लगाई है न यह आग? तू कहता है, तूने मुझे रात में सोबरन के साथ खेत में देखा था। अब खोल दूँ तेरी पोल-पट्टी?" पंडित शिवदत्त को उम्मीद नहीं थी कि रधिया इतने दिन बाद फिर अपने पुराने चंडी रूप में लौट आएगी। वे कुछ कहते, तब तक तो रधिया ने अन्य लोगों को सुनाते हुए कह दिया, "इससे पूछो, आधी रात को यह मँगता आनगाँव के एक आदमी लेकर मेरे घर पर क्या अपनी बिटिया की दलाली करने आया था? मैंने इसे

फटकार दिया, तो यह बगुला भगत बदला निकालने आया है? झूठे, मक्कार, तुझे कोढ़ फूटे, मेरे बासनों का नास करा दिया। एक-एक फूटे सकोरे की पाई-पाई टेंट से न निकलवा ली, तो नाम रधिया नहीं। गाँव वालों को तमाशा दिखाने लाया है तू? पर गाँव वालों की आँखें फूट गई हैं क्या? सोबरन से दुश्मनी रही होगी, तो तेरी रही होगी। उसको कुछ किया होगा, तो तूने किया होगा।"

पंडित शिवदत्त नहीं जानते थे कि रधिया इतना साफ झूठ इतनी सफाई से बोल जाएगी। वे कब किसके लिए दलाली करने आए थे इसके द्वार पर? उन्होंने लोगों से कहा कि रधिया झूठ बोल रही है, लेकिन रधिया ने बात इस ढंग से कही थी कि लोगों को पंडित शिवदत्त की बात पर विश्वास नहीं हुआ। सबूत यह था कि रात को पंडित शिवदत्त के यहाँ सचमुच कोई बाहर का आदमी आया था, जो सुबह होते ही चला गया था। पंडित शिवदत्त सफाई देने लगे कि वह तो उनकी जिजमानी का नाई था, जो एक बारात का न्यौता देने आया था। लेकिन वह तो उनके साथ कहीं नहीं निकला। और उसे लेकर रधिया के घर आने का तो सवाल ही नहीं उठता। वे इतने धरम-करम वाले आदमी क्या रंडी की दलाली करने आएँगे? कहते-कहते उनकी आँखों में आँसू आ गए। रात को सोबरन ने उन्हें खेत में उठाकर पटक दिया था और अब रधिया ने यह झूठा इल्जाम उन पर लगा दिया है। हे भगवान, सचमुच कलियुग आ गया है। सत्य का कोई मूल्य नहीं रहा।

रधिया ने देखा कि पंडित शिवदत्त फँस गए हैं, तो उसकी आवाज और ऊँची हो गई, "एक-एक पाई धरा लूँगी, एक-एक पाई। मुझ पर कोई बस नहीं चला, तो इस घोड़ी को भड़काकर ले आया। नासपीटे, मेरे सारे बासन खुँदवा दिए। सारे दिन हाड़-गोड़ तोड़कर बनाए थे। माँग-माँगकर फोकट का माल खाने वाले मँगते, तुझे क्या मालूम कि इनको बनाने में कितनी मेहनत लगती है। और मुझे धमकाने के लिए इन मुखिया-चौधरी लोगों को अपने साथ लाया है तू? तू समझता है, मैं इनकी दाब-डाँट में आ जाऊँगी? अरे, मैं किसी का दिया नहीं खाती। ढैया-पँसेरी नाज देते हैं, तो ढाई मन की मेहनत के बासन बनवा लेते हैं। ऊपर से बेगार। कभी रधिया इनका आँगन लीपे, कभी रधिया इनके घरों में मिट्टी पहुँचाए। इतनी मेहनत तो चमार-टोले के लिए करूँगी, तो भी अपना और अपने बालकों का पेट भर लूँगी। तू यह मत समझ कि मुझे तू गाँव से निकलवा देगा। यहाँ सब कितने बड़े धर्मात्मा हैं, सो मैं खूब जानती हूँ। कहे तो एक-एक के गुन बखान दूँ?"

"चलो भाई, चलो। अब रधिया किसी को नहीं बोलने देगी।" चौधरी रामसेवक ने मुखिया नूरसिंह से कहा। मुखिया नूरसिंह पंडित शिवदत्त का हाथ पकड़कर बोले,

"छोड़ो पंडित, तुमको वहम हो गया होगा। रधिया की जगह किसी और को देख लिया होगा तुमने।"

पंडित शिवदत्त की स्थिति बड़ी विचित्र हो गई थी। अब वहाँ से चल देने में ही उन्हें कुशल दिखाई दी। लेकिन सोबरन की बहू उन्हें खिसकते देख आगे बढ़ आई। सोबरन को रधिया के घर में न पाकर वह कब की बाहर निकल आई थी और चुपचाप खड़ी हुई नासमझ-सी यह सब देख-सुन रही थी। अब वह पंडित शिवदत्त की ओर लपकी, "जाते कहाँ हो, पंडित, पहले यह बताओ कि मेरा आदमी कहाँ है?"

"यह रहा तुम्हारा आदमी।" मास्टर की आवाज ने सबको चौंका दिया।

सबने देखा, नशे में धुत्त सोबरन को एक-एक बाँह से कंधे पर उठाए मास्टर और संतू धीमर उसे घसीटते-से ला रहे हैं।

"पुलिया के पास पीये पड़ा था।" संतू ने कहा और सोबरन को वहीं जमीन पर डाल दिया।

अंगूरी सोबरन को देखकर सिहर गई। उसने घूँघट खींच लिया और जहाँ की तहाँ खड़ी रह गई। क्या कहे-करे, उसे कुछ नहीं सूझा।

"ले जाओ, भाई, कोई इसे इसके घर पहुँचा दो।" मुखिया ने कहा। लेकिन कोई आगे नहीं आया। संतू हाथ झाड़ चुका था और मास्टर अपनी साइकिल थाम चुका था। बाकी लोग मुखिया से नजर बचाकर मास्टर की तरफ देख रहे थे। स्थिति समझ कर मुखिया ने कहा, "मास्टर, तुम कहो, कोई दो आदमी इसे यहाँ से उठाकर इसके घर ले जाएँ।"

मास्टर का इशारा पाकर जवाहर नाई और सीतो मुसहर ने सोबरन को उसी तरह कंधों पर डाला और घसीट ले चले। सोबरन की बहू भी चुपचाप उनके पीछे चली गई।

"कोई बात न बात की जड़।" किसी ने कहा और अपनी साइकिल से टिके खड़े मास्टर को छोड़कर बाकी सब लोग भौंचक, डरे-सहमे और बेवकूफ-से बने वहाँ से चल पड़े।"

मास्टर चकित-सा खड़ा था और रधिया के चेहरे पर बदलते भावों को पढ़ रहा था। फिर आँगन में फूटे पड़े कच्चे सकोरों की ओर देखते हुए उसने कहा, "आज तो तुम्हारा बहुत नुकसान हो गया, मास्टरनी की अम्मा!"

"नहीं मास्टर, यह कोई खास नुकसान नहीं है।" रधिया ने कहा और बिट्टो को मास्टर के पास छोड़कर गोद के बच्चे को चूमती हुई भीतर चली गई। जब वह मुड़ी थी, मास्टर ने उसकी डबडबाई आँख में चमकता एक आँसू देख लिया था।

मास्टर कुछ पल ठिठका-सा खड़ा रहा, फिर बिट्टो के साथ स्कूल की तरफ चल दिया।

रधिया भीतर जाकर बच्चे को सीने से लगाए फूटकर रो पड़ी। वह रो रही थी और अपने को ही कोस रही थी, "माटीमिली, तूने हाथ भी पकड़ा तो किसका!"